इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
(अमरकंटक, मध्यप्रदेश–484887)

हिंदी विभाग

हिंदी अध्ययन मण्डल

एम.ए. हिंदी साहित्य पाठ्यक्रम
सेमेस्टर प्रणाली (सी.बी.सी.एस.) वर्ष 2019–2020 से प्रभावी

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
(अमरकंटक, मध्यप्रदेश–484887)
हिंदी विभाग
एम.ए.(हिंदी)
हिंदी कोर पाठ्यक्रम

प्रश्नपत्रों का क्रम

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र क्रम	कोर्स कोड	प्रश्नपत्र का नाम	क्रेडिट	पूर्णांक
1	1	PG_HLCC01	हिंदी साहित्य का इतिहास	4	100
	2	PG_HLCC02	आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य	4	100
	3	PG_HLCC03	आदिवासी साहित्य	4	100
	4	PG_HLCC04	भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा	4	100
2	5	PG_HLCC05	आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)	4	100
	6	PG_HLCC06	हिंदी गद्य साहित्य– निबंध, नाटक एवं अन्य विधाएं	4	100
	7	PG_HLCC07	भारतीय साहित्य सिद्धांत और हिंदी आलोचना	4	100
	8	PG_HLCC08	दलित विमर्श	4	100
	9	PG_HLCC09	अनुवादः सिद्धांत एवं अनुप्रयोग	4	100
3	10	PG_HLCC10	आधुनिक हिंदी कविता (नई कविता और समकालीन कविता)	4	100
	11	PG_HLCC11	हिंदी कथा साहित्य– कहानी एवं उपन्यास	4	100
	12	PG_HLCC12	हिन्दी सिनेमा	4	100
	13	PG_HLCC13	पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत	4	100
	14	PG_HLCC14	स्त्री साहित्य	4	100
4	15	PG_HLCC15	प्रयोजनमूलक हिंदी	4	100
	16	PG_HLCC16	‘ाोध प्रविधि एंव कम्प्यूटर अनुप्रयोग	4	100
	17	PG_HLCC17	तुलनात्मक भारतीय साहित्य	4	100
	18	PG_HLCC18	लघु षोध प्रबंध	8	100
			कुल क्रेडिट	76	1800

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (मध्यप्रदेश)
शैक्षणिक सत्र– 2019–20 से प्रभावी
स्नातकोत्तर हिंदी पाठ्यक्रम (सी.बी.सी.एस.,सेमेस्टर प्रणाली)

प्रश्नपत्र मूल्यांकन पद्धति

सत्र 2019–20 से चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली स्नातकोत्तर हिंदी पाठ्यक्रम में लागू की गई है। प्रत्येक सेमेस्टर के प्रत्येक प्रश्नपत्रों में 60 अंकों की बाह्य मूल्यांकन परीक्षा एवं 40 अंकों की आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा होगी। सभी प्रश्न पत्रों में मूल्यांकन के लिए प्रश्नों की संख्या विकल्प (दीर्घउत्तरीय) के साथ होगा।

बाह्य प्रश्नपत्रों का अंक विभाजन

दीर्घउत्तरीय प्रश्न– 12×05=60

कुल पूर्णांक = 60

व्याख्या वाले प्रश्नपत्रों का अंक विभाजन इस प्रकार रहेगा–

खण्ड (क)– व्याख्यात्मक प्रश्न– 06×02=12
खण्ड (ख)– दीर्घउत्तरीय प्रश्न– 12×04=48

कुल पूर्णांक = 60

आंतरिक मूल्यांकन

आंतरिक मूल्यांकन का अंक विभाजन इस प्रकार रहेगा–

प्रथम आंतरिक परीक्षा–	10
द्वितीय आंतरिक परीक्षा–	10
अधिन्यास(परियोजना कार्य)–	10
प्रस्तुति(शोधपत्र वाचन)–	10

कुल पूर्णांक = 40

चयन आधारित क्रेडिट सिस्टम एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम का विज़न

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की संरचना का निर्माण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रस्तावित सीबीसीएस (चयन आधारित क्रेडिट सिस्टम) शिक्षण–अधिगम प्रणाली पर केन्द्रित है। जिसमें सीबीसीएस के लक्ष्य को केन्द्रित करते हुए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के विज़न को समाहित किया गया है।

प्रस्तुत हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम पारंपरिक हिंदी साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ उसके क्रमिक विकास की प्रक्रिया को समझने में मददगार साबित हो सकता है। इसी के साथ यह पाठ्यक्रम साहित्य के अंतरविषयक ज्ञान के व्यापक फलक को अपने कलेवर में समाहित करता है।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम साहित्य और समाज के विकास की अवधारणा को रेखांकित करते हुए समाज और साहित्य के समसामयिक विमर्श को भी वैज्ञानिक–वस्तुनिष्ठ दृष्टि से अवलोकन के लिए शिक्षार्थी को तैयार करता है। जिससे शिक्षार्थी न केवल अपने कौशल को संवर्द्धित कर सकते हैं बल्कि अपने अनुशासनात्मक ज्ञान को भी परिष्कृत व परिमार्जित कर सकते हैं और अपने जीवन को सार्थक एवं रोजगारोन्मुख बना सकते हैं।

पाठ्यक्रम निर्माण समिति
हिंदी विभाग

हिंदी अध्ययन मंडल में उपस्थित सदस्यगण

प्रो. रेनू सिंह प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)	*प्रो. आर.एस. सर्राजु आचार्य, हिंदी विभाग हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद*
प्रो.तीर्थेश्वर सिंह आचार्य,हिंदी विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)	*प्रो. श्रवण कुमार मीणा प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर (राजस्थान)*
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)	*प्रो. खेमसिंह डहेरिया आचार्य,हिंदी विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)*
डॉ. प्रमोद कुमार सहायक प्रोफेसर, भाषा विज्ञान विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)	*डॉ. प्रवीण कुमार सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक(म.प्र.)*

अध्ययन मंडल के अध्यक्ष को अधिकृत किया जाता है कि यदि इस पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन में कोई बाधा उत्पन्न हो रही हो तो विभागीय एवं स्थानीय सदस्यों के साथ बैठक कर उचित निर्णय लिया जा सकता है।

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC01 पाठ्यक्रम : हिंदी साहित्य का इतिहास

सेमेस्टर– 01 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम में इतिहास की अवधारणा, हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्षन, साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धतियां, हिन्दी के प्रमुख इतिहास ग्रंथों, साहित्यिक केन्द्रों, पत्र–पत्रिकाओं आदि पर विचार करते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास का गहन अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई – (1) इतिहास और साहित्य की अवधारणा

इतिहास क्या है, इतिहास और साहित्य का अंतःसंबंध, साहित्य का इतिहास दर्शन, हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा, हिंदी साहित्यः काल विभाजन एवं नामकरण, आदिकाल के प्रमुख कवि और उनका काव्य, आदिकाल का नामकरणः समस्याएं एवं संभावनाएं, आदिकाल की पृष्ठभूमि (सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और साहित्यिक), आदिकाल की परिस्थितियां एवं प्रवृत्तियां, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य

इकाई– (2) भक्तिकाल

भक्ति और भक्ति आंदोलनः उदय, पृष्ठभूमि (सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और साहित्यिक) एवं अखिल भारतीय स्वरूप, भक्ति आंदोलन की दार्शनिक विचारधाराएं, भक्तिकाल की धाराएं एवं प्रवृत्तियां– निर्गुण धारा और सगुण धारा, भक्तिकाल के प्रमुख कविः रचनाएं और उनकी साहित्य की संवेदनाएं, भक्तिकालीन कविता का वैचारिक पक्ष – स्त्री एवं वंचित समुदाय के प्रति

इकाई–(3) रीतिकाल

दरबारी संस्कृति और रीतिकाव्य, रीतिकाल का नामकरण, रीतिकाल की युगीन पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां (सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और साहित्यिक), रीतिकालीन काव्यधाराएं एवं प्रवृत्तियां, रीतिकालीन प्रमुख कविः रचनाएं और उनकी साहित्य की संवेदनाएं

इकाई–(4) आधुनिकता और भारतीय नवजागरण की अवधारणा

नवजागरणः परिस्थितियां और आंदोलन(राजाराम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फुले), हिंदी नवजागरणः भारतेंदु पूर्व हिन्दी गद्य, आधुनिकता और आधुनिकबोध, आधुनिकता और हिंदी साहित्य, 1857 की राज्यक्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भारतेंदुयुगीन साहित्य लेखन और समस्याएं, भारतेंदुयुगीन साहित्य की प्रवृत्तियां, भारतेन्दु हरिष्चंद्र और उनका मंडल, 19वीं ‘ाताब्दी में हिन्दी की प्रमुख पत्र–पत्रिकाएं, खड़ीबोली आंदोलनः महावीर प्रसाद द्विवेदी, द्विवेदीयुगीन साहित्य की प्रवृत्तियां, स्वाधीनता आंदोलनः राष्ट्रीय चेतना, समाज, संस्कृति और साहित्य

इकाई–(5) आधुनिक हिंदी साहित्य

आधुनिक काव्य अनुशीलन : परिवेश, प्रवृत्तियां और संवेदना

रा”ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी पर उसका प्रभाव, हिन्दी में स्वच्छंदत्तावादी प्रवृत्ति का उदय और विकास, छायावाद, प्रगतिषील आंदोलन और हिन्दी साहित्य, स्वाधीनता आंदोलन में परिवर्तन और साहित्य, प्रयोगवाद, नई कविता

हिंदी गद्य साहित्य : परिवेश, प्रवृत्तियां और संवेदना

उपन्यास, कहानी, हिंदी आलोचना, नाटक, निबंध तथा अन्य गद्य साहित्य, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का बदलता स्वरूप, देष विभाजन और साहित्य, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में विचारधारात्मक द्वंद्व : व्यक्तिस्वातंत्र्य, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, मनोष्लि”ाणवाद, अम्बेडकरवाद आदि, नई कहानी

समकालीन हिन्दी साहित्य–साहित्यिक पत्रकारिता और लघु पत्रिका आंदोलन, समकालीन हिन्दी साहित्य– कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में नयी प्रवृत्तियों का उदय, समकालीन विमर्शमूलक साहित्य का इतिहासलेखनः एक सामान्य परिचय (विशेष संदर्भः दलित, स्त्री और आदिवासी), समकालीन हिन्दी साहित्य की विषे”ाताएं।

सहायक ग्रंथः

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल–हिंदी साहित्य का इतिहास
- हजारीप्रसाद द्विवेदी – हिंदी साहित्य की भूमिका
- हजारीप्रसाद द्विवेदी– हिंदी साहित्यः उद्भव और विकास
- रामस्वरूप चतुर्वेदी– हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास
- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र– हिंदी साहित्य का अतीत
- सं. नगेन्द्र – हिंदी साहित्य का इतिहास
- बच्चन सिंह– हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास
- ई.एच.कार – इतिहास क्या है
- रामकुमार वर्मा– हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
- गणपतिचंद्र गुप्त – हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
- विश्वनाथ त्रिपाठी– हिंदी साहित्य का सरल इतिहास
- हजारीप्रसाद द्विवेदी – हिंदी साहित्य का आदिकाल–
- साहित्य का इतिहास दर्शन– नलिन विलोचन शर्मा
- साहित्य का इतिहास दर्शन– जगदीश्वर चतुर्वेदी
- हिंदी साहित्य का आधा इतिहास– सुमन राजे
- हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएं – अवधेश प्रधान
- रामविलास ‘ार्मा– भारतेंदु युग और हिन्दी भा”ाा की परंपरा
- प्रेमषंकर– भक्तिकाव्य की भूमिका
- के. दोमोरान – भारतीय चिंतन परम्परा
- षिवकुमार मिश्र – भक्तिकाव्य और लोकजीवन
- गोविन्द त्रिगुणायत – कबीर की विचारधारा
- मैनेजर पाण्डेय – भक्ति आंदोलन और सूरदास

- रामविलास ‘ार्मा– भारतेन्दु हरिष्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएं
- रामविलास ‘ार्मा– महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण
- मैनेजर पाण्डेय– साहित्य और इतिहास दृ”िट
- नंददुलारे वाजपेयी– हिन्दी साहित्य बीसवीं ‘ाताब्दी
- विष्वनाथ त्रिपाठी– हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
- रामस्वरूप चतुर्वेदी– हिन्दी साहित्य और संवेदना का इतिहास
- नामवर सिंह – कविता के नये प्रतिमान
- देवीशंकर अवस्थी– विवेक के रंग
- ओमप्रकाश वाल्मीकि– दलित साहित्य का सौंदर्यषास्त्र
- राजेन्द्र यादव / अर्चना वर्मा, सं.– अतीत होती सदी और स्त्री का भवि”य,
- महादेवी वर्मा– श्रृंखला की कड़ियां
- बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास
- श्यौराज सिंह बेचैन / देवेन्द्र चौबे, सं.– चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य
- विजयेन्द्र स्नातक– हिन्दी साहित्य का इतिहास
- जयप्रकाश कर्दम– इक्कीसवीं सदी में दलित आंदोलन (साहित्य एवं समाज चिंतन)
- मोहनदास नैमिशराय – हिंदी दलित साहित्य
- वंदना टेट– आदिवासी साहित्यः परंपरा और प्रयोजन
- कंवल भारती– दलित साहित्य की अवधारणा
- वी कृष्णा/भीम सिंह – आदिवासी विमर्श
- बद्री नारायण– उपेक्षित समुदायों का इतिहास
- बद्री नारायण – लोक संस्कृति और इतिहास
- पुखराज मारू– हिंदी साहित्य का इतिहास पुनर्लेखन की आवश्यकता

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC02 पाठ्यक्रम : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य
सेमेस्टर– 01 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्यांष की व्याख्या और काव्य सौन्दर्य के साथ–साथ कवियों की समालोचना भी अपेक्षित है।

इकाईः 1

चंद बरदाई – पृथ्वीराज रासउ (संयोगिता परिणय) सं0 माता प्रसाद गुप्त, साहित्य सदन, चिरगॉव, झांसी
विद्यापति– नागार्जुन द्वारा संपादित 'विद्यापति के गीत' (वाणी प्रकाषन,दिल्ली) से गीत संख्या 3,4,5,6,9,14,17,20, 25, 37, 64, 75, 95, 112, 113, 116, 125, 126, 127 – इनमें से कुल 05 गीत

इकाईः 2

कबीर– हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत 'कबीर', राजकमल, नई दिल्ली के परिषि"ट में संकलित छंदों में से क्रम संख्या 207 से अंत तक कुल 10 पद

जायसी –'पदमावत' सं0 माता प्रसाद गुप्त, भारती भंडार इलाहाबाद, स्तुति खंड, नागमती वियोग खंड, उपसंहार में से कुल –05 दोहे

इकाईः 3

सूरदास– भ्रमरगीत सार (सं0 रामचंद्र 'ुक्ल) पद संख्या 21 से 101 तक में से कुल 05 पद

तुलसीदास– रामचरित मानस (अयोध्याकांड 185 वें दोहे से अंत तक) (गीताप्रेस) कवितावली (उत्तरकाण्ड 91से 109छंद तक) दोनों में से 05 दोहे। (रामचन्द्र 'ुक्ल) न. प्र. स.

इकाईः 4

मीरा मुक्तावली– संपादक नरोत्तम दास स्वामी पद संख्या (कुल 31) 1,2,3,4,5,6,10,12,13,14, 15, 18, 20, 22, 28, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 39, 44, 48, 59, 68, 72, 73, 87, 94, 95, 96, और 97 (मीरा मुक्तावली सं0 नरोत्तम दास स्वामी, प्रकाषन : राजस्थान ग्रंथगार, जोधपुर, 1955) में से कोई 05 पद।

इकाईः 5

बिहारीलाल– बिहारी रत्नाकर (आरंभ के 100 दोहे में कोई 10 दोहे)
घनानंद– घनानंद कवित्त (आरंभ के 50 छंद में से कोई 05)। (विष्वनाथ प्रसाद मिश्र)

सहायक ग्रंथ :

- पृथ्वीराज रासो की भाषा – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- हिंदी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
- कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- कीर्तिलता और विद्यापति का युग – अवधेश प्रधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- विद्यापति – शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
- जायसी – विजयदेव नारायण साही, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
- सूफी मत : साधना और साहित्य – रामपूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, वाराणसी
- हिंदी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति – श्यामसुंदर शुक्ल, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।
- नाथपंथ और संत साहित्य – नागेन्द्र नाथ उपाध्याय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- संत साहित्य – राधेश्याम दूबे, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- चंदबरदाई – शांता सिंह, साहित्य अकादमी, दिल्ली
- जायसी – सं0 सदानंद शाही, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।
- सूरदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- महाकवि सूरदास – नंददुलारे वाजपेयी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
- सूरसाहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी , हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई
- गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- गोसाईं तुलसीदास – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी
- तुलसीदास और उनका युग – राजपति दीक्षित, ज्ञानमंडल, वाराणसी
- मानस दर्शन – श्रीकृष्ण लाल, आनंद पुस्तक भवन, वाराणसी
- भक्तिकाव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र, दिल्ली
- लोकवादी तुलसीदास – विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
- भक्तिकाल में भारतीय रहस्यवाद – राधेश्याम दूबे, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी
- मीराबाई – श्रीकृष्ण लाल, आनंद पुस्तक भवन, वाराणसी ।

पाठ्यक्रम संख्याः PG_HLCC03 पाठ्यक्रमः आदिवासी साहित्य

सेमेस्टरः 01 क्रेडिटः 04 पूर्णांकः 100

इकाई–1. आदिवासी साहित्यः आ"ाय और अवधारणा

आदिवास से आशय, आदिवासी साहित्य की अवधारणा, आदिवासी समाज का संघर्ष और आदिवासी आंदोलन ,आदिवासी समाज का सांस्कृतिक वैि"ाष्ट्य और उसका बदलता स्वरूप, समकालीन आदिवासी प्र"न, वै"वीकरण, आदिवासी द"ान, आदिवासी समाज, आदिवासी अस्मिता व अस्तित्व का सवाल, आदिवासी समाज के विकास की समस्याएंः चुनौतियां एवं संभावनाएं, आदिवासी साहित्यालोचना, आदिवासी लोकगीत– वेदना , चेतना और संघर्ष।

इकाई–2 आदिवासी कविता –

निर्मला पुतुल– उतनी दूर मत ब्याहना बाबा, अपनी जमीन तला"ाती बेचैन स्त्री
जसिन्ता केरकेटटा – सारंडा के फूल
महादेव टोप्पो– तुम्हारी मुख्यधारा में, माँदर के साथ, फिर भी हम कहते रहे हैं तुम्हे जोहार
अनुज लुगुन – हमारी अर्थी शाही हो नही सकती
ग्रेस कुजुर – हे समय के पहरेदारों
वाहरु सोनवणे – मेघा और आदिवासी
हरिराम मीणा – आदिवासी और यह दौर
वंदना टेटे – कब तक, औरत ᑊ और ᑊᑊ
अर्जुन सिंह धुर्वे– बैगा गीत, वर्षा गीत– हैरे करमा सौता के जरन बैरी खेलि मरना, देख सावर मोरे विपत रे, धन करम धन जिया रे तथा अन्य लोकगीत।

इकाई–3 आदिवासी कहानियां–

प्रो0 रामदयाल मुण्डा– उस दिन रास्ते में
हरिराम मीणा – सांवड़या
एलिस एक्का – वनकन्या, दुर्गी के बच्चे और एल्मा की कल्पनाएं, सलगी, जुगली और अंबा गाछ
मंगल सिंह मुंडा– महुआ का फूल
जंगल की ललकार – वाल्टर भेंगरा 'तरुण'
रूपलाल बेरिया – शहर के दाग का दान

पूर्वोत्तर का कथा साहित्य–

1. दो तारे भाई–भाई (हिनचोंग मुसोसो) कार्बी (असम), प्रस्तुति : थेस्सो क्रॉपी
2. छूरा के सींग (मिजोरम) प्रस्तुति– डॉ. एल.टी लियान खियांगते अनुवाद– सारंग कुमार

इकाई–4 आदिवासी उपन्यास –

पीटर पॉल एक्का– जंगल के गीत

हरिराम मीणा – डाँग

इकाई–5 आदिवासी नाटक और अन्य विधाएँ

कालीबाई – प्रभात

जीवनी– बिरसा मुंडा, रानी दुर्गावती

सहायक ग्रंथः

- रामदयाल मुंडा– आदिधरम
  – आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल
- श्यामाचरणदुबे– मानव और संस्कृति
- वीरभारत तलवार– झारखंड के आदिवासियों के बीच
- शैलेन्द्र महतो– झारखंड की समरगाथा
- कुमार सुरेश सिंह– बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन
- नदीम हसनैन– जनजातीय भारत
- केदारप्रसाद मीणा – क्रांतिकारी आदिवासी –आजादी के लिए आदिवासियों का संघर्ष
  –आदिवासी समाज, साहित्य और राजनीति
- गया पांडे– भारतीय जनजातीय संस्कृति
- रमणिका गुप्ता– आदिवासी स्वर और नई शताब्दी
- लाला जगदलपुरी– बस्तर इतिहास एवं संस्कृति
- ब्रह्मदेव शर्मा– आदिवासी स्वशासन
  –आदिवासी विकास
- अमर्त्य सेन– आर्थिक विकास और स्वातंत्र्य
- जसप्रीत बाजवा– आदिवासी स्वर
- विनोद कुमार– आदिवासी संघर्ष गाथा
- एल पी विद्यार्थी, बीके राम बर्मन– दि ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया
- एस सी राय– दि मुंडाज एंड देयर कंट्री
- के एस सिंह– द शिड्यूल्ड ट्राइब्स
- रमेशचंद्र मीणा– आदिवासी विमर्श
- रमणिक गुप्ता– आदिवासी विकास से विस्थापन
  –आदिवासी अस्मिता की पड़ताल करते
- वंदना टेटे– आदिवासी साहित्यः परंपरा और प्रयोजन
  – वाचिकता आदिवासी दर्शन, साहित्य और सौन्दर्यबोध
- अनुज लुगुन– आदिवासी अस्मिता–प्रभुत्व और प्रतिरोध

- रसाल सिंह, बन्ना राम मीणा– आदिवासी अस्मिता वाया कथा साहित्य
- प्रो. श्रवण कुमार मीणा– आदिवासी कहानी विविध संदर्भ
- प्रो. श्रवण कुमार मीणा – समकालीन विमर्श बदलते परिदृश्य
- हेरॉल्ड एस.तोपनो– उपनिवेशवाद और आदिवासी संघर्ष
- वी कृष्णा/ भीम सिंह– आदिवासी विमर्श

पत्रिका–

युद्धरत आम आदमी का आदिवासी विशेषांक
वाङ्गमय– आदिवासी विशेषांक
अरावली उद्घोष
आदिवासी विमर्श

पाठ्यक्रम संख्या : **PG_HLCC04** पाठ्यक्रम : **भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा**

सेमेस्टर– 01 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इकाई–1 (क) हिंदी भाषा : उद्‌भव और विकास

(ख) हिंदी बोलियों का परिचय

(ग) भाषा : परिभाषा, तत्त्व, अंग, प्रकृति और विशेषताएं, भाषा परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं

(घ) भाषाविज्ञान – परिभाषा एवं स्वरूप, अंग, प्रमुख अध्ययन–पद्धतियां

इकाई–2 (क) स्वनविज्ञान – परिभाषा, स्वन, संस्वन और स्वनिम, स्वनभेद, स्वनपरिवर्तन के कारण एवं दिशाएं

(ख) स्वनिमविज्ञान – परिभाषा, स्वनिम के भेद, स्वनिम और उपस्वनिम, स्वनिमवितरण के सिद्धांत

(ग) रूपिमविज्ञान – शब्द और रूप (पद), संबंध तत्त्व और अर्थतत्त्व, रूप, संरूप, रुपिम और स्वनिम, रूपिमों का स्वरूप, रूपिमों का वर्गीकरण

इकाई–3 (क) वाक्यविज्ञान – वाक्य की परिभाषा, संरचना, निकटस्थ अवयव, वाक्य के प्रकार, वाक्य–रचना में परिवर्तन – कारण एवं दिशाएं

(ख) अर्थविज्ञान – शब्दार्थ सम्बन्ध विवेचन, अर्थपरिवर्तन के कारण एवं दिशाएं

(ग) भाषाविज्ञान की प्रमुख शाखाएं – समाजभाषा विज्ञान, शैलीविज्ञान और कोशविज्ञान का सामान्य परिचय

इकाई–4 (क) भारतीय एवं पाष्चात्य भा"ाा चिन्तक– पाणिनी, चॉमस्की एवं सस्यूर का भा"ाा चिन्तन

(ख) नागरी लिपिः परिचय एवं वैज्ञानिकता

इकाई–5 (क) भारत के आदिवासी समुदाय और आदिवासी भा"ाएँ

(ख) आदिवासी भाषा–गोंडी संथाली, बैगानी भा"ाा का मानकीकरण, स्वरूप और विकास

सहायक ग्रंथ :

- भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
- सामान्य भाषाविज्ञान– बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
- हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी, भारती भंडार, इलाहाबाद
- भाषा और समाज – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान – देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद
- भारत की भाषा समस्या – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- संपर्क भाषा हिंदी – सं0 सुरेश कुमार, ठाकुर दास, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
- राजभाषा हिंदी : प्रचलन और प्रसार – डॉ0 रामेश्वर प्रसाद, अनुपम प्रकाशन, पटना
- नागरी लिपि : हिंदी और वर्तनी – अनंत चौधरी, दिल्ली माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली
- समसामयिक हिंदी में रूपस्वानिमिकी – सुधाकर सिंह

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC05 पाठ्यक्रम : आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक)

सेमेस्टर– 02 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं की व्याख्या और काव्य सौन्दर्य के साथ–साथ कवियों की समालोचना भी अपेक्षित है ।

निर्धारित पाठ्यांश

मैथिलीषरण गुप्त	:	साकेत (नवम् सर्ग)
जयषंकर प्रसाद	:	कामायनी– श्रद्धा सर्ग लज्जा, इड़ा
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	:	सरोज स्मृति, राम की 'ाक्ति पूजा और जूही की कली, बांधोन नाँव इस ठांव बंधु
सुमित्रानन्दन पंत	:	परिवर्तन और संध्या के बाद ।
महादेवी वर्मा	:	मैं नीर भरी दुःख की बदली, धीरे–धीरे उत्तर क्षितिज से आ वसंत रजनी, पंथ होने दो अपरिचित, यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो, तू धूल भरा ही आया, सब फिर विफल है प्राण मेरे

सहायक ग्रंथ :

- जयशंकर प्रसाद – नंददुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, इलाहाबाद
- कामायनी – एक पुनर्विचार – मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- निराला की साहित्य साधना (तीन भाग) – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- सुमित्रानंदन पंत : डॉ0 नगेन्द्र
- छायावाद : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- महादेवी वर्मा : जगदीश गुप्त, नई दिल्ली, 1994
- छायावाद की प्रासंगिकता : रमेशचन्द्र शाह, नई दिल्ली, 1973
- छायावाद और नवजागरण : महेन्द्रनाथ राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC06 पाठ्यक्रम : **हिंदी गद्य साहित्य–निबंध, नाटक एवं अन्य विधाएं**

सेमेस्टर– 02 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम में हिन्दी गद्य के उद्भव और विकास, गद्य विधाओं की रचनात्मक विशेषताएं, हिन्दी गद्य की शैलियां और उसकी वैचारिकता को खासकर नाटक में नाट्य और नाट्यशास्त्र, हिन्दी नाटक का विकास, हिन्दी रंगमंच की परम्परा और नए प्रयोग, रंग–पद्धतियां और रंग शैली स्पष्ट करते हुए निर्धारित निबंध एवं नाटक की संवेदना, साहित्य सौन्दर्य और उसकी आलोचना का अध्ययन अपेक्षित है

निर्धारित रचनाएं तथा रचनाकार

निबंध

रामचंद्र 'ुक्ल : मनोविकार, कविता क्या है

हजारी प्रसाद द्विवेदी : कुटज, अशोक का फुल

व्यंग्य

हरिषंकर परसाई : इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर

रेखाचित्र /संस्मरण

महादेवी वर्मा : स्मृति की रेखाएं–भक्तिन, ठकुरी बाबा, बिटिया

जीवनी/आत्मकथाः

बेचन शर्मा उग्र : अपनी खबर

रिपोर्ताज

फणीष्वरनाथ रेणुः ऋणजल–धनजल

यात्रा वृतांत

अमृतलाल वेगड़ : सौन्दर्य की नदी नर्मदा

नाटक : किंही तीन नाटक का अध्ययन अपेक्षित है

अंधेर नगरी : भारतेन्दु हरिष्चन्द्र
स्कंदगुप्त : जयषंकर प्रसाद
आ"ाढ़ का एक दिन : मोहन राकेष
हानूष : भी"म साहनी
आगरा बाजार : हबीब तनवीर
'हैलो कॉमरेड' : मोहनदास नैमिशराय

एकांकी–

स्ट्राईक : भूवनेश्वर
रेशमी टाई : रामकुमार वर्मा

सहायक ग्रंथः

- सत्येन्द्र तनेजा – नाटकार भारतेन्दु की रंग परिकल्पना, दिल्ली,1976
- जगदीष 'ार्मा – मोहन राकेष की रंगसृि"ट, दिल्ली, 1975
- गोविन्द चातक – आधुनिक नाटक का मसीहा, दिल्ली, 1975
- नेमिचन्द्र जैन (सं.)– आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच, दिल्ली, 1978
- जयदेव तनेजा – समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच, दिल्ली, 1978
- नेमिचन्द्र जैन – रंगदर्षन, दिल्ली, 1967
- दषरथ ओझा – हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास, दिल्ली, 1970
- हजारी प्रसाद द्विवेदी – नाट्यषास्त्र और भारतीय परम्परा, नई दिल्ली, 1971
- रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- दूसरी परम्परा की खोज : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- रामचन्द्र शुक्ल – मलयज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य – चौथीराम यादव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी
- हिंदी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली
- बच्चन सिंह – हिंदी नाटक
- नेमिचन्द्र जैन–रंग दर्शन
- जगन्नाथ शर्मा– जयशंकर प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन
- वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी – नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान, जगत राम एण्ड संस, दिल्ली
- नर्वदेश्वर राय– हिंदी नाट्यशास्त्र का स्वरूप, हिंदी ग्रंथ कुटीर, पटना
- सर्वेश कुमार मोर्य(सं.)– दलित नाटक की आलोचना

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC07 पाठ्यक्रम : **भारतीय साहित्य सिद्धांत और हिंदी आलोचना**
सेमेस्टर– 02 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

यह पाठ्यक्रम दो खण्ड में विभाजित है। खण्ड– 1 में काव्यशास्त्र का इतिहास– प्रस्थान और प्रमुख परिवर्तन बिन्दु, प्रमुख आचार्य और काव्यषास्त्रीय सम्प्रदाय, नागरिक, सामाजिक और सहृदय की भूमिका, काव्य के स्वरूप सम्बन्धी मत–काव्य सृजन पक्ष और प्रतिभा, काव्यस्वाद का पक्ष और साधारणीकरण, रस की अवधारणा, ध्वनि विचार, लक्षणा और अलंकार, संस्कृत काव्यषास्त्र की प्रसंगानुकूलता और प्रासांगिकता पर चर्चा अध्ययन की दृष्टि से अपेक्षित है तथा इस खण्ड– 2 में आलोचना की अवधारणा, हिन्दी आलोचना की भारतीय परंपरा और उसके इतिहास, प्रगतिशील, समकालीन आलोचना, कथा आलोचना की समस्याएं, हिंदी आलोचना का संकट–चुनौतियां, अस्मितामूलक साहित्यालोचन पर विचार–विमर्ष करते हुए निम्नलिखित साहित्य चिंतकों की आलोचनात्मक अवधारणाओं, पद्धतियों और प्रतिमानों का गहन अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई 1–

(क) संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास – सामान्य परिचय

(ख) काव्य का लक्षण, काव्य हेतु एवं काव्यप्रयोजन, काव्य की आत्मा

(ग) रससिद्धान्त – रस की अवधारणा, रसनिष्पत्ति और साधारणीकरण

(घ) ध्वनिसिद्धांत – ध्वनि की अवधारणा, ध्वनि विचार का स्रोत, ध्वनि का वर्गीकरण, ध्वनि सिद्धान्त का महत्व

(ड.)अलंकार सिद्धांत – अलंकार की अवधारणा, अलंकार और अलंकार्य, अलंकारों का वर्गीकरण, अलंकार सिद्धांत एवं अन्य सम्प्रदाय

इकाई 2–

(क) रीति सिद्धांत – रीति की अवधारणा, रीति एवं गुण, रीति का वर्गीकरण

(ख) वक्रोक्ति सिद्धांत – वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति का वर्गीकरण, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद, वक्रोक्ति का महत्व

(ग) औचित्य सिद्धांत – औचित्य की अवधारणा, औचित्य का महत्व

इकाई3– हिंदी आलोचना :उदभव और विकास
रामचंद्र 'ुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी
इकाई 4– हिंदी आलोचनाः विविध आयाम
नगेन्द्र, नंददुलारे वाजपेय, रामविलास 'ार्मा, मुक्तिबोध

इकाई 5– समकालीन हिंदी आलोचना और चिंतन का नया स्वरूप

ओमप्रकाश वाल्मीकि, कंवल भारती, विमल थोरात, वंदना टेटे, सुधा अरोड़ा, प्रभा खेतान

सहायक ग्रंथः

- भारतीय साहित्यशास्त्र – गणेश–त्रयंबक देशपांडे, पापुलर बुक डिपो, पूना
- रसमीमांसा – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- संस्कृत आलोचना – बलदेव उपाध्याय
- रस प्रक्रिया – शंकर देव अवतरे, दिल्ली
- हिस्ट्री आफ संस्कृत पोएटिक्स – पी0 बी0 काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
- भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज – राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- ध्वनि सम्प्रदाय और उनके सिद्धांत – भोलाशंकर व्यास, चौखंभा, वाराणसी
- काव्यशास्त्र – भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- रस सिद्धांत– नगेन्द्र
- रामविलास शर्मा– आचार्य रामचंद्र 'ुक्ल और हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, 1993
- नामवर सिंह– दूसरी परंपरा की खोज, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, 1982
  – इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, 1968
- मैनेजर पाण्डेय– साहित्य और इतिहास दृष्टि, पीपुल्स लिटरेसी, दिल्ली, 1981
- मलयज– रामचंद्र शुक्ल, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली,1987
- विष्वनाथ त्रिपाठी– हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली,1992
- बच्चन सिंह– हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1994
- षिवप्रसाद सिंह– शांतिनिकेतन से षिवालिक, नेषनल पब्लिशिंग, दिल्ली, 1988
- गजानन माधव मुक्तिबोध– समीक्षा की समस्याएँ, रचनावली भाग–5, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, 1980
- मुक्तिबोध – कामायनी : एक पुनर्विचार ',रचनावली भाग–6, राजकमल, दिल्ली, 1980
- मुक्तिबोध– नयी कविता का आत्मसंघ"ा,' रचनावली भाग–6, वही
- रेने वेलेक, अनु इंद्रनाथ मदानः आलोचना की धारणाएं, हरियाणा हिन्दी ग्रंथ अकादमी, चण्डीगढ़, 1978
- मैनेजर पाण्डेय– शब्द और कर्म, वाणी प्रकाषन, दिल्ली, 1997
- नंददुलारे वाजपेयी– हिन्दी साहित्य : बीसवीं 'ताब्दी, लोकभारती, इलाहाबाद, 1983
- नंददुलारे वाजपेयी'– नया साहित्य : नये प्रश्न, वही, 1955
- पुरू"ोत्तम अग्रवाल– तीसरा रूख, राधाकृ"ण प्रकाषन, दिल्ली,1996
- वीरभारत तलवार– रस्साकषी, सारांष प्रकाषन, दिल्ली, 2002

- मुरली मनोहर प्रसाद सिंह– आधुनिक हिन्दी साहित्य : विवाद और विवेचना, स्वराज प्रकाषन, दिल्ली, 2000
- देवेंद्र चौबे – आलोचना का जनतंत्र, आधार प्रकाषन, पंचकुला, 2011
- कमला प्रसाद– आलोचक और आलोचना, आधार प्रकाषन, पंचकूला, 2002
- वंदना टेटे– आदिवासी साहित्यः परंपरा और प्रयोजन
  – वाचिकता
  – आदिवासी दर्शन, साहित्य और सौन्दर्यबोध
- ओमप्रकाश वाल्मीकि– दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
  –मुख्यधारा और दलित साहित्य
  –दलित साहित्यः अनुभव, यथार्थ और संघर्ष
- शरणकुमार लिंबाले– दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र
- प्रो.टीवी कट्टीमनी– दलित साहित्य का सामाजिक विज्ञान
- प्रो. वी कृष्णा– भारतीय कविता कठघरे के बीच
  – भारतीय दलित साहित्य
- राम चंद्र– दलित साहित्यः आशय, अवधारणा और आंदोलन
  –दलित साहित्य यात्रा
- प्रवीण कुमार– सौन्दर्यशास्त्र और दलित दृष्टि
  –दलित साहित्य का सौन्दर्यबोधः चिंतन और प्रक्रिया
- जयप्रकाश कर्दम– दलित विमर्शः साहित्य के आईने में
  – दलित साहित्य मूल्यांकन
- कंवल भारती – दलित विमर्श की भूमिका
  – दलित साहित्य की अवधारणा
  – दलित कविता का आत्म संघर्ष
- नामदेव– आलोचना की तीसरी परंपराः जयप्रकाश कर्दम
- विमल थोरात– दलित साहित्य का स्त्रीवादी स्वर
  –मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिन्दी कविता में सामाजिक और राजनीतिक चेतना

पत्रिकाएं :

वर्तमान साहित्य, 'ताब्दी आलोचना अंक 1 और 2, मई–2002
आलोचना, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली से अलग से भी प्रकाषित ।
अपेक्षा, आलोचना विशेषांक, दिल्ली
दलित अस्मिता, दिल्ली।

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC08 पाठ्यक्रम : **दलित साहित्य**

सेमेस्टर– 02 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम में दलित का आशय, दलित साहित्य की अवधारणा, दलित साहित्य के सरोकार, दलित साहित्य आंदोलन के उदय की पृष्ठभूमि : मराठी दलित आंदोलन, हिन्दी दलित आंदोलन, मार्क्सवादी आदोलन, वर्ण–जाति विरोधी अन्य आंदोलन और ब्लैक आंदोलन, दलित साहित्य की सैद्धांतिकी : फुले–अम्बेडकरवाद, बौद्ध धम्म एवं दर्शन, अस्मितावाद और दलित सौंदर्यशास्त्र, दलित स्त्री प्रश्न और हिन्दी दलित आलोचना, दलित और भूमंडलीकरण के विवेचन–विश्लेषण के साथ निर्धारित रचनाओं और रचनाकारों के सौन्दर्य का अध्ययन अपेक्षित है।

आत्मकथा : जूठन –ओमप्रकाश वाल्मीकि

कविताएं : कंवल भारती : 'तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती', 'शम्बूक', 'बलिहारी मन'
मलखान सिंह : 'सुनो ब्राह्म्ण', 'अंधड़', हमारे गांव में', मैं आदमी नहीं हूं
डॉ. सी. बी. भारती : 'घृणा', 'जोंक', 'तितली'
डॉ. सुशीला टाकभौर : 'सपने सज जाएंगे', 'पंख मेरे फड़फड़ाते हैं', लौट आओ तुम', स्त्री

कथा साहित्यः

कहानियां :–

ओमप्रकाश वाल्मीकि : 'सलाम', 'मैं ब्राह्मण नहीं', 'मुम्बई कांड'
मोहनदास नैमिशराय : 'आवाजें', 'महाशूद्र'
रजत रानी मीनू : वे दिन, सुनिता
जयप्रकाष कर्दमः नो बार, खरोंच
रत्नकुमार सांवरिया : खेत, फुलवा

उपन्यास :–

'थमेगा नहीं विद्रोह' – उमराव सिंह जाटव

नाटक : –

'वीरांगना झलकारीबाई' – माता प्रसाद

सहायक ग्रंथ :

- महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली (1,2)–अनु एवं सं. – डॉ. एल जी मेश्राम 'विमलकीर्ति'
- डॉ. अम्बेडकर– संपूर्ण वाड्मय, भारत सरकार, कल्याण मंत्रालय, दिल्ली
- कांशीराम – चमचा युग (अनु.एस. एस. गौतम)
- आचार्य आनन्द झा– चावार्क दर्षन
- रामषरण शर्मा– शूद्रों का प्राचीन इतिहास
- मधुलिमये – अम्बेडकर एक चिंतन (अनु. मस्तराम कपूर)
- राजकिषोर (सं.)– हरिजन से दलित
- ओमप्रकाष वाल्मीकी – दलित साहित्य का सौन्दर्यषास्त्र
  – मुख्यधारा और दलित साहित्य
- षरण कुमार लिबाले– दलित साहित्य का सौन्दर्यषास्त्र
- कंवल भारती– दलित विमर्ष की भूमिका
  – दलित साहित्य की अवधारणा
- डॉ. चंद्र कुमार वरठे– दलित साहित्य आंदोलन
- अजय कुमार (सं.)– दलित पैंथर आंदोलन
- डॉ. विमल थोरात – मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिन्दी कविता में सामाजिक और राजनीतिक चेतना
  – दलित साहित्य का स्त्रीवादी स्वर
- डॉ. विमल थोरात, डॉ सूरज बडत्या (सं) – दलित कविता का विद्रोही स्वर
- डॉ. तेजसिंह – आज का दलित साहित्य
- चमनलाल (सं.)– दलित और अष्वेत साहित्य : कुछ विचार
- पुरूषोत्तम अग्रवाल– संस्कृत : वर्चस्व और प्रतिरोध
- डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी– दलित साहित्य और सामाजिक न्याय
- ईषकुमार गंगनिया– अम्बेडकरवादी साहित्य विमर्ष
- डॉ. एन सिंह– मेरा दलित चिंतन
- ष्यौराज सिंह 'बेचैन'– चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य
- रजतरानी मीनू – नवें दषक की हिन्दी दलित कविता
- रमणिका गुप्ता – स्त्री नैतिकता का तालीबानीकरण
  (सं.)– दलित चेतना सोच
- डॉ. धर्मवीर – कबीर के आलोचक
  – कबीर : बाज भी, कपोत भी, पपीहा भी
  – कबीर के कुछ और आलोचक
- अभय कुमार दुबे (सं.)– आधुनिकता के आईने में दलित
- षिवबाबू मिश्र– जूठन एक विमर्ष
- माता प्रसाद (सं.)– लोकगीतों में वेदना और विद्रोह के स्वर
- सूरजपाल चौहान (सं.)– हिन्दी के दलित कथाकारों की पहली कहानी
- हरपाल सिंह 'अरूष'– दलित साहित्य की भूमिका
- डॉ. विवके कुमार – दलित समाज : पुरानी समस्याएं नई आकांक्षाएं (एक समाजषास्त्रीय अवलोकन)

- कांचा ऐलय्या– मैं हिंदू क्यों नहीं (अनु. ओम प्रकाष वाल्मीकि)
- प्रो. टी वी कट्टीमनी– दलित साहित्य का सामाजिक विज्ञान
- प्रो. वी कृष्णा– भारतीय कविता कठघरे के बीच
  – भारतीय दलित साहित्य
- राम चंद्र– दलित साहित्यः आशय, अवधारणा और आंदोलन
- प्रवीण कुमार– दलित साहित्य का सौन्दर्यबोधः चिंतन और प्रक्रिया
- जयप्रकाश कर्दम– दलित विमर्शः साहित्य के आईने में
- श्रवण कुमार मीणा– दलित साहित्य और समसामयिक संदर्भ

पत्रिकाएं :

'अपेक्षा', सम्पादक – डॉ. तेज सिंह

'अम्बेडकर इन इंडिया', सम्पादक–दयानाथ निगम

''दलित साहित्य वार्षिकी'' सम्पादक – जयप्रकाष कर्दम

विशेषांक : 'हंस' – सत्ता विमर्श और दलित, अगस्त 2004,

'वसुधा' – दलित विशेषांक, अंक–58

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC09 पाठ्यक्रम : **अनुवादः सिद्धांत एवं अनुप्रयोग**

सेमेस्टर– 02 क्रेडिट : 04 पूर्णांकः 100

इकाई–1 अनुवाद की अवधारणा

अनुवाद : अर्थ और परिभाषा

अनुवाद का महत्व

अनुवाद का स्वरूप

अनुवाद के उपकरण–कोश ग्रंथ

अनुवाद प्रक्रिया

इकाई–2 अुनवाद की इकाई, परंपरा और प्रकार

शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ प्रक्रिया के पक्ष– विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन

अनुवाद की चिंतन परम्पराः भारतीय और पाश्चात्य

अनुवाद के प्रकार– पाठानुवाद, आशु अनुवाद, लिप्यान्तरण, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, मशीनी अनुवाद

इकाई–3 अनुवाद व्यवहारः समस्याएं और संभावनाएं

सर्जनात्मक साहित्य, ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी साहित्य

जनसंचार, प्रशासनिक अनुवाद, बैंकिंग अनुवाद और विधि अनुवाद

विविध प्रयुक्ति क्षेत्रों से संबंधित सामग्री के अनुवाद की सामान्य समस्याएं

विभिन्न प्रयुक्ति क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली

साहित्य और साहित्येतर अनुवाद की समस्याएं

अनुवादः राजनीतिक परिप्रेक्ष्य

सांस्कृतिक रूपांतरणः प्रतिरोध और अनुवाद

अनुवाद की व्यावसायिक संभावनाएं

इकाई–4 अनुवाद की प्रक्रिया और हिंदी

हिंदी में अनुवादः चुनौतियां और संभावनाएं

अनुवाद से हिंदी भाषा का संवर्द्धन

हिंदी, अंग्रेजी और भारतीय भाषा का अनुवादः (भारतीय ⟺ भाषा ⟺ हिंदी अंग्रेजी)

अनुवाद की सीमाएं

इकाई–5 अनुवाद और समीक्षा–दृष्टि

पुनर्निरीक्षण, मूल्यांकन, भाषिक– संरचनागत और शैलीगत, सांस्कृतिक शब्द, लोकोक्तियां एवं मुहावरे, आलोचना

सहायक ग्रंथ :

- अनुवाद विज्ञानः सिद्धांत और अनुप्रयोग– नगेन्द्र
- अनुवाद के सिद्धांत– रामालु रेड्डी
- अनुवाद (व्यवहार से सिद्धांत की ओर)– हेमचंद्र पांडे
- कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग– विजय कुमार मल्होत्रा
- सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद– सुरेश सिंहल
- अनुवाद और तत्काल भाषांतरण– विमलेश कांति वर्मा
- अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग –प्रो. जो. गोपीनाथ लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद कल : सिद्धांत एवं प्रयोग – कैलाशचन्द्र माहिया, तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली
- अनुवाद सिद्धांत एवं समस्याएं एवं समस्याएं–रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी आलेख प्रकाशन दिल्ली
- अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा– सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद विज्ञान की भूमिका– कृष्ण कुमार गोस्वामी, प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य– रीतारानी पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC10 पाठ्यक्रम : आधुनिक हिंदी कविता (नई कविता और समकालीन कविता)

सेमेस्टर– 03 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम में प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता और समकालीन कविता की अवधारणा, युगबोध, संवेदनाओं तथा निर्धारित कविताओं की व्याख्या और काव्य सौन्दर्य के साथ–साथ कवियों की समालोचना भी अपेक्षित है ।

निर्धारित कविताएं

इकाई–1 अज्ञेय : यह द्वीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, कितनी नावों में कितनी बार असाध्य वीणा ।

इकाई–2 नागार्जुनः कल्पना के पुत्र हे भगवान, सिंदूर तिलकित भाल, पैने,अकाल और उसके बाद, 'ाासन की बंदूक, कविता मनु"य हूँ, खुरदरे पैर ।

इकाई–3 मुक्तिबोध : भूल गलती, अंधेरे में ।

धूमिल : पटकथा, मोचीराम

इकाई–4 ओमप्रकाश वाल्मीकि : किष्किंधा, अस्थि विसर्जन, इतिहास

जयप्रकाश कर्दम : तुमने कहा, लालटेन, दरिया

इकाई–5 अनामिका : स्त्रियां, बेजगह, दरवाजा, अयाचित

निर्मला पुतुल : तुम क्या जानते हो, बिटिया मुर्मू

सहायक ग्रंथ :

- विष्वनाथ प्रसाद तिवारी : समकालीन हिन्दी कविता, नई दिल्ली, 1982
- रामस्वरूप चतुर्वेदी : अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या, नई दिल्ली, 1972
- सर्वेष्वर और मलयज सं0: 'ामषेर, नई दिल्ली, 1971
- नरेन्द्र वषि"ठ : 'ामषेर की कविता, नई दिल्ली, 1980
- नामवर सिंह सं0 : ''आलोचना'' का नागार्जुन विषे"ाांक अंक 56–57, नई दिल्ली
- रामविलास 'ार्मा : नई कविता और अस्तित्ववाद, नई दिल्ली, 1978
- मुक्तिबोध : नये साहित्य का सौन्दर्यषास्त्र, दिल्ली, 1971
- जगदीष गुप्त : नयी कविता–स्वरूप और समस्याएं, नई दिल्ली, 1971
- गोबिन्द प्रसाद सं0 : त्रिलोचन के बारे में, 1992, वाणी प्रकाषन, दरियागंज, नई दिल्ली
- कंवल भारती : दलित कविता का संघर्ष, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC11 पाठ्यक्रम : हिंदी कथा साहित्य (कहानी एवं उपन्यास)

सेमेस्टर– 03 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम में निर्धारित हिन्दी कथा साहित्य (कहानी–उपन्यास) का उद्भव और विकास, हिन्दी कथा साहित्य (कहानी–उपन्यास) की मुख्य प्रवृत्तियों के साथ–साथ निर्धारित रचनाओं में से किन्हीं पांच की अन्तर्वस्तु और रूप विधान संबंधी विषे"ाताओं के साथ उनके रचनाकारों की समालोचना, आलोचनात्मक अध्ययन भी अपेक्षित है ।

निर्धारित पाठ्य

स्वाधीनता पूर्व कथा साहित्य

इकाई–1 प्रेमचंद–ईदगाह, जयशंकर प्रसाद– आकाषदीप, जैनेन्द्र –अपना–अपना भाग्य

इकाई–2 उपन्यास

हजारी प्रसाद द्विवेदी : बाणभट्ट की आत्मकथा

स्वाधीनता और उसके बाद कथा साहित्य

इकाई–3 कहानी– निर्मल वर्मा– परिंदे, फणीष्वरनाथ रेणु– तीसरी कसम, पिता–ज्ञान रंजन, कमलेश्वर–राजा निरबंसिया, अज्ञेय–ग्रैंग्रीन, 'ोखर जोषी– कोसी का घटवार, भी"म साहनी अमृतसर आ गया, हरिषंकर परसाई– इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर

इकाई–4 उपन्यास–

फणीष्वरनाथ रेणु : मैला आंचल

इकाई–5 समकालीन कथा साहित्य

कहानी– उ"ाा प्रियंवदा–वापसी, कृष्णा सोबती– सिक्का बदल गया, शिवमूर्त्ति–तिरियाचरितर/सिरीउपमायोग, उदय प्रकाश– टेपजू/ तिरिछ,

उपन्यास–

मन्नू भंडारी –आपका बंटी

सहायक ग्रंथ

- डॉ गोपाल राय : गोदान : नया परिप्रेक्ष्य, अनुपम, प्रकाषन, पटना, 2000ई
- राम विलास 'ार्मा : प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल, दिल्ली, 1989
- हंसराज रहबर : प्रेमचंद : व्यक्तित्व और कृतित्व, आत्माराम,दिल्ली–1962
- नेमिचंद जैन : अधूरे साक्षात्कार, वाणी प्रकाषन,दिल्ली,1989
- विजय मोहन सिंह : कथा समय, राधाकृ"ण, दिल्ली 1983
- ज्ञानचंद जैन : प्रेमचंद पूर्व के हिन्दी उपन्यास, आर्य प्रकाषन मंडल, दिल्ली,1998
- मधुरेष : हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाषन, इलाहाबाद, 1998
- गोपाल राय : अज्ञेय और उसके उपन्यास, ग्रन्थ निकेतन,पटना, 1984
- सं0 परमानंद श्रीवास्तवः 'ाखर एक जीवनी का महत्व, नई कहानी प्रकाषन, इलाहाबाद, 1992
- राल्फ फॉक्स : उपन्यास और लोक जीवन, पी पी एच,दिल्ली, 1980
- मीनाक्षी मुकर्जी : रियालिज्म एण्ड रियलिटीःदी नॉवल एण्ड सोसायटी इन इंडिया, ओ.यूपी,दिल्ली, 1985
- गीतांजली पाण्डे : बिटविन टू वर्ल्डस, मनोहर दिल्ली, 1989
- सं0 सत्यप्रकाष मिश्र : गोदान का महत्व, नई कहानी प्रकाषन,इलाहाबाद, 1992
- सं0 सदानंद 'ाही :दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद, साहित्य संस्थान, गोरखपुर, 2000
- सं0 डॉ राजकमल राय : 'ाखर एक जीवनी : विविध आयाम, अभिव्यक्ति प्रकाषन, इलाहाबाद
- प्रभा खेतान : उपनिवेष में स्त्री, राजकमल, दिल्ली–2002
- रामचंद्र : प्रेमचंद की दलित विषयक कहानियां, आखर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
- जयप्रकाश कर्दम : ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियां, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

पत्रिकाएं

1. हंस, हिन्दी उपन्यास : एक सदी, जनवरी, 1999, सं0 राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 110 002
2. सं0 अखिलेश : तद्भव पत्रिका का श्रीलाल 'ाुक्ल पर एकाग्र अंक, मार्च, 1990, लखनऊ–16
3. सं0 चंद्रदेवराय, जयप्रकाष धूमकेतु : अभिनव कदम अंक 6–7 राही मासूम रजा पर केंद्रित नवम्बर 2001–अक्टूबर 2002, 223, प्रकाष निकुंज, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा, मऊनाथ भंजन–257101(उ0 प्र0)
4. सं0 नंदकिषोर नवल : कसौटी पत्रिका, बीसवीं सदीः कालजयी कृतियां, समापन अंक, सं. 15, पुनष्य, पटना 2004
5. अपेक्षाः तेज सिंह, कहानी और उपन्यास, विशेषांक, दिल्ली
6. वसुधा : समकालीन कहानी विशेषांक

पाठ्यक्रम संख्याः PG_HLCC12 पाठ्यक्रमः हिंदी सिनेमा

सेमेस्टर : 01 क्रेडिट : 04 पूर्णांक : 100

इस पाठ्यक्रम में समाज और संस्कृति के संदर्भ में सिनेमा का आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई:1 सिनेमा की अवधारणा
सिनेमाः अर्थ, आशय और अवधारणा
हिंदी सिनेमा की वैचारिकी

इकाई:2 हिंदी सिनेमा और साहित्य
सिनेमा : संवेदना और सरोकार
साहित्यः संवेदना और सरोकार
साहित्य और सिनेमा अंतःसंबंध
भारतीय सिनेमा और साहित्यिक कृतियां

इकाईः 3 सिनेमा और समाज
सिनेमा और समाज का अंतःसंबंध
समाज पर सिनेमा का बढ़ता प्रभाव और बढ़ती चुनौतियां
सिनेमा और संस्कृति
कला बनाम सिनेमा का सवाल

इकाईः 4 सिनेमा और अस्मितामूलक विमर्श
सिनेमा और स्त्री समाज
सिनेमा और दलित समाज
सिनेमा और आदिवासी समाज

इकाईः 5 हिंदी सिनेमा और नयी तकनीक– संभावनाएं और चुनौतियां , वैश्वीकरण का परिप्रेक्ष्य और सिनेमा

(संदर्भ और समीक्षा : मुगले आजम, मदर इंडिया, ओ माई गॉड, दोस्ती (पुरानी), देवदास, ,पीके, रंगरसिया, चक्रव्यूह, थ्री इडिएट, राईजिंग द शूद्रा, भारत एक खोज, अनटच्ड इंडिया, वाटर, पींक, गोदान, सद्गति, सूरज का सातवां घोड़ा, पेनॉल्टी कॉर्नर, द लास्ट बहुरूपिया, न्यूटन आर्टिकल–15)

सहायक ग्रंथ :

- फिल्मनिर्देशन : कुलदीप सिन्हा
- हिन्दी सिनेमा का इतिहास–मनमोहन चड्ढा
- नया सिनेमा–ब्रजेश्वर मदान
- भारतीय सिने सिद्धान्त–अनुपम ओझा
- सिनेमा : कल, आज, कल– विनोद भारद्वाज
- हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष–प्रकाशन विभाग
- हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष–प्रहलाद अग्रवाल
- राजकपूर : आधी हकीकत, आधा फसाना– प्रहलाद अग्रवाल
- सिनेमा का जादुई सफर– प्रताप सिंह
- नौशाद : ज़र्रा जो आफताब बना– ज़िया इमाम
- सिनेमा के बारे में जावेद अख्तर से बातचीत– नसरीन मुन्नी कबीर
- गुरूदत्त–विमल मित्र
- सत्यजीत रे–महेन्द्र मिश्र
- कैमरा मेरी तीसरी आंख – राधू कर्माकर
- धुनों की यात्रा –पंकज राग
- सिनेमा एक सफरनामा– डॉ. एस. आर. जयश्री
- दलित–आदिवासी सिनेमा– डॉ. प्रमोद कुमार मीणा

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC13 पाठ्यक्रम : पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत

सेमेस्टर– 03 क्रेडिट : 4 पूर्णांकः 100

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पाष्चात्य चिंतकों के जीवन, कला, साहित्य, दर्षन आदि से सम्बन्धित विचारों का अध्ययन अपेक्षित है ।

इकाई 1. प्लेटो : काव्य–दर्षन

अरस्तू : अनुकरण–सिद्धांत, विरेचन–सिद्धांत, त्रासदी, कामदी

इकाई 2. लोंजाइनस : उदात्त की अवधारणा

रोमांटिक काव्य–सिद्धांत : विलियम वर्ड्सर्वथ और सैमुअल टेलर कोलरिज

इकाई 3. मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना – दृ"िट

बेनिडिटो क्रोचे : अभिव्यंजनावाद

इकाई 4. टी. एस. एलियटः परंपरा की अवधारणा, निर्वैक्तिक काव्य का सिद्धांत, वस्तुनि"ठ सह–संबंध

आई. ए. रिचर्डसः रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यवहारिक आलोचना, मूल्य सिद्धान्त तथा काव्य–भा"ाा सिद्धांत

इकाई 5. एफ. आर. लीविस : साहित्य में नैतिक बोध के लिए संघ"ा, ईमानदारी और वस्तुमत्ता

जॉन क्रो रैंसम : नयी आलोचना, नयी आलोचना की प्रमुख अवधारणाएं,

रूसी रूपवाद और उसका अवदान, फ्रांसीसी संरचनावाद, साहित्यक "ौली विज्ञान, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता और विखण्डनवाद, नारीवादी आलोचना, ब्लैक आलोचना

सहायक ग्रंथ :

- निर्मला जैन, कुसुम बांठिया : पाष्चात्य साहित्य चिंतन, राधाकृ”ण प्रकाषन, दिल्ली, 1980
- नगेन्द्र सं0 : पाष्चात्य काव्यषास्त्र का इतिहास, नेषनल पब्लिषिंग हाउस, दिल्ली 1979
- नगेन्द्र : नयी समीक्षा : नये संदर्भ, नेषनल पब्लिषिंग हाउस , दिल्ली,1974
- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव : सरंचनात्मक ‘ौली विज्ञान, दि मैकमिलन, दिल्ली, 1984
- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव : ‘ौलीविज्ञान और आलोचना की नई भूमिका, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान,आगरा, 1972
- सीमोन द बोउवार : स्त्री : उपेक्षिता, अनु, प्रभा खेतान, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली–1970
- जर्मेन ग्रीयर : विद्रोही स्त्री, अनु. मधु बी. जोषी, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, 2001
- .रामचंद्र ‘ुक्ल : चिंतामणि भाग–1 और 2,, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, 1986
- राजेन्द्र यादव : आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाषन, दिल्ली, 2001
- .गोपीचंद नारंग : सरंचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यषास्त्र, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2001
- सुरेष कुमार : ‘ौली विज्ञान, दि मैकमिलन कंपनी इंडिया लि, दिल्ली 1977
- मृणाल पाण्डे : परिधि पर स्त्री, राधाकृ”ण प्रकाषन, दिल्ली 1998
- -Wimsat & Brooks : Literary Criticism: A Short History, Oxford Publishing Comp; New Delhi 1957
- Wellek, Rene : History of Modern Criticism 1750-1950, vol 1- 4, Jonathan Cape, London, 1966
- Culler, Jonathan : Structuralist Poetics : Structuralism, Languistics and the Study of Literature, Routledge & Kegan Paul, London, 1975
  : The Pursuit of Signs :Semiotics,Literature, Deconstruction, Routledge & Kegan Paul, London, 1981
- Erlich, Victor : Russian Formalism, The Hauge, Mouton, 1955
- W. Handy : Twenty Century Literary Criticism, Light & Life Pub, New Delhi,1974
- Lewis F. R. : The Common Pursuit, Pelican, London, 1962
- Bennet, Tony : Formalism & Marxism, Methuen, London, 1979
- Eagleton, Terry : Criticism and Society in Literary History, London , 1971
  : The Significance of Theory, Oxford, London, 1989
  : The ldeology of Aesthetics, Oxford ,London, 1991.
- Said, Edward : The word, the Text and the Critic , Harvard Uni. Press, Cambridge,1983
- Abrams , M. H. : Doings thing with Texts: Essays in Criticism and CriticalTheory, New York, 1989.
  : English Romantic Poets : Modern Essays in Criticism, Oxford, London 1975
- Newton, K.M. : Interpreting the Text, Harvester, New Yark, 1990
- Moi, Toril : Sexual texual Politics : Feminist Literary Theory, Routledge,New York, 1985
- Hartman, G.H.: Criticsm in Wilderness : The Study of Literature Today, Yale University Press, New Have,1980
- Kapoor, Kapil &Ranga: Canonical Texts of English Literary Criticism, Academic& Ranga Foundation, Delhi, 1995
- Lentricchia, Frank : After the New Criticism, The Athone Press, London, 1980
- Watson, George : The Literary Critics, Penguin, London, 1979
- William, Raymond : Culture and Society, Pelicom Book, London, 1981
- Sushila Nayar : Women Pioneers : in India Renaissance, NBT, & Kamala Mankkar (Ed.)Delhi, 2002
- Mary Beth Rose : Gender and Heroism in Early Modern Literature, Univ. of Chicaqo Press, 2002

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC14 पाठ्यक्रम **स्त्री साहित्य**

सेमेस्टर : 03 क्रेडिट : 04 पूर्णांक 100

इकाई–1 स्त्री विम”ा की अवधारणा और विकास

1. स्त्रीवाद और स्त्री विम”ा का इतिहास
2. भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्री और स्त्री मुक्ति के प्रयास : नवजागरण और स्त्री प्र”न, पितृसत्ता, नैतिकता और यौन शुचिता, परंपरा और आधुनिकता के बीच स्त्री, स्त्री मुक्ति का संघर्ष, स्त्री अस्मिता की तला”ा

इकाई–2 स्त्री विम”ा का हिन्दी उपन्यास–

बेघर : ममता कालिया

इकाई–3 स्त्री विम”ा की कहानियाँ

मृदुलागर्ग : मीरा नाची

नमिता सिंह : गणित

फहमिदा रियाज : पर्सनल एकाउंट

सु”ीला टाकभौरे : भूखा

मैत्रेयी पुष्पा : फैसला

इकाई–4 स्त्री विम”ा और आत्मकथा

जमाने में हम : निर्मला जैन

इकाई–5 स्त्री विम”ा और हिन्दी कविता

रंजना जायसवाल : तालमेल सौन्दर्यबोध

अनामिका : चौका, अयाचित

सुनीता जैन : जी करता है उसका भी

सविता सिंह : मैं किसकी औरत हूँ, परंपरा

निर्मलापुतुल : स्त्रियाँ, तुम्हारा एहसान लेने से पहले सोचना पडेगा।

सहायक ग्रंथ :

सं.निवेदिता मेनन,जिनी लोकनिता : नारीवादी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदे”ाालय दिल्ली वि”वविद्यालय, दिल्ली

राके”ा कुमार : नारीवादी विम”ा, आधार प्रका”ान, पंचकूला हरियाणा

देवेन्द्र इस्सर : स्त्री मुक्ति के प्र”न, संवाद प्रका”ान, मेरठ

सुबोध शुक्ल : गूंगे इतिहास की सरहदों पर, आधार प्रका”ान, पंचकुला हरियाणा

प्रभाखेतान : बाजार के बीच; बाजार के खिलाफः भूमण्डलीकरण और स्त्री प्र”न, वाणी प्रका”ान

: भूमण्डलीकरण,व्राण्ड संस्कृत और राष्ट्र, वाणी प्रका”ान

सीमोन द बोउवार– स्त्री उपेक्षित, हिन्द पाकेट बुक्स
महादेवी वर्मा– श्रंखला की कडियाँ
रेखा कस्तवार– स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ
गोपा जो”ाी– भारत में स्त्री असमानता
राजेन्द्र यादव– आदमी के निगाह में औरत
पं. रामबाई– हिन्दू स्त्री का जीवन
ताराबाई सिंदे– स्त्री पुरुष तुलना
जे. एस. मिल.– स्त्री और पराधीन
मेरी बोल्स्टनक्राफ्ट–स्त्री अधिकारों का औचित्य साधन
जमैनग्रीर– बधिया स्त्री
सुमनराजे– इतिहास में स्त्री
गीताश्री– औरत की बोली
मैत्रीय पुष्प– चर्चा हमारा
वीरभारत तलवार– रस्साक”ाी
उमा चक्रवर्ती– जाति, समाज में पिहसत्ता
श्रीकांत यादव– स्त्री अलक्षित, लोकभारती प्रका”ान
चारू गुप्ता – स्त्रीत्व से हिन्दुत्व तक, राजकमल प्रका”ान
गगनगिल– अंधेरे में वुद्ध, राजकमल प्रका”ान
ललसा यादव : अलक्षित आख्यान, लोक भारती प्रका”ान
सं. धर्मवीर : सीमतंत्री उपदे”ा

पाठ्यक्रम संख्याः PG_HLCC15 पाठ्यक्रमः प्रयोजनमूलक हिन्दी

सेमेस्टरः 04 क्रेडिटः 04 पूर्णांकः 100

इकाई–1 प्रयोजनमूलक हिन्दी : परिभाषा और स्वरूप

(क) व्यवहार क्षेत्र– कार्यालयी हिंदी, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण, प्रारूपण, अध्यादेश, विज्ञप्ति, परिपत्र, निविदा, अनुस्मारक, कार्यालयी पत्र लेखन

(ख) राजभाषा का संवैधानिक स्वरूप/प्रावधान, राजभाषा–राष्ट्रभाषा की संकल्पना, संपर्कभाषा

इकाई–2 हिन्दी शब्द सम्पदा एवं हिंदी का मानकीकरण– वैज्ञानिक, तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली पत्रकारिता : स्वरूप, प्रकार एवं संक्षिप्त इतिहास, हिन्दी के विकास के प्रयत्न और अनुवाद की भूमिका

इकाई–3 जनसंचार माध्यम और हिंदी– पत्रकारिता, मीडिया लेखन–श्रव्य माध्यम (रेडियो), मौखिक भाषा की प्रकृति, समाचार लेखन एवं वाचन, रेडियो नाटक, उद्घोषणा लेखन, फीचर तथा रिपोर्ताज पटकथा लेखन, विज्ञापन की भाषा, सूचना क्रांति के युग में हिंदी

इकाई–4 हिंदी कम्प्यूटिंग– कम्प्यूटर परिचय, इंटरनेट सम्बन्धी उपकरणों का परिचय, लिंक, ब्राउजिंग, ई–मेल भेजना तथा प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग व अपलोडिंग, हिन्दी के साफ्टवेयर पैकेज।

इकाई–5 अंग्रेजी की प्रषासनिक अभिव्यक्तियां, अंग्रेजी के मुहावरे लोकोक्तियों का प्रतिरूप, अंग्रेजी 'ाब्दों के प्रतिरूप, हिन्दी अनुवाद

सहायक ग्रंथः

- दंगल झाल्टे– प्रयोजनमूलक हिंदी , सिद्धांत और प्रयोग
- अर्जुन तिवारी– जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता
- बालेंदु शेखर तिवारी– प्रयोजनमूलक हिंदी,
- वीरेंद्र श्रीवास्तव– प्रयोजनमूलक हिंदी
- विनोद दोगरे– प्रयोजनमूलक हिंदी
- महेंद्र मिततल– व्यवहारिक हिंदी
- किशोरी दास वाजपेयी– हिंदी शब्दानुशासन
- कामता प्रसाद गुरु– हिंदी व्याकरण
- डा. सूर्यप्रसाद दीक्षित – प्रयोजनी हिन्दी
  – जन पत्रकारिकता, जनसंचार एवं जनसंपर्क
- डा. सुमित मोहन – मीडिया लेखन
- डा. हरीमोहन – कम्पयूटर और हिन्दी

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC16 पाठ्यक्रम : शोध प्रविधि एंव कम्प्यूटर अनुप्रयोग

सेमेस्टर– 04 क्रेडिट : 4 पूर्णांक : 100

इकाई–1 शोध की अवधारणा

शोध क्या है, शोध : स्वरूप एवं विशेषताएं, शोध और आलोचना

इकाई–2 शोध प्रविधिः अवधारणा और स्वरूप

शोध प्रविधिः स्वरूप एवं विशेषताएं, शोध प्रविधिः आशय और आवश्यकता, हिंदी में शोध का आरंभ

इकाई–3 शोध का व्यवहारिक पक्षः

शोध के क्षेत्र, शोध के प्रकार, साहित्यिक शोध की विशेषताएं सामग्री, संकलन– विष्ले”ाण ‘ाोध वि”ाय का चयन, ‘ाोध और तथ्य विषले”ाण, ‘ाोध और उपसंहार/ नि”क”ा संदर्भ ग्रंथसूची, अनुक्रमणिक, उद्धरण की विधियाँ

इकाई–4 शोधः पद्धति, समस्याएं और चुनौतियाँ तथा कम्प्यूटर

शोध–संबंधी समस्याएं, शोधार्थी के गुण, शोध की गुणवत्ता, हिंदी में शोध की दशा और दिशा ‘ाोध पत्र/ प्रबंध लेखन की मूल अवधारणाएं, ‘ाोध सार लेखन, ‘ाोध लेखन का प्रारूप, ‘ाोध लेखन में कम्प्यूटर की भूमिका; डिजिटल फॉर्म में ‘ाोध पत्र लेखन।

इकाई–5 ‘ाोध और कम्प्यूटर अनुप्रयोग ‘ाोध में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग, सूची इंजन, पावर, ज्वांइट, तुलनात्मक ‘ाोध की समस्याएँ, ग्राफ, मॉडुल बनाना।

सहायक ग्रंथः

सावित्री सिंहा– अनुसंधान का स्वरूप
डॉ सावित्री सिन्हा : अनुसंधान की प्रक्रिया
विनय मोहन ‘ार्मा : ‘ाोध प्रविधि
डॉ देवराज उपाध्याय : साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान
सं0 अमियदेव–षिषिर : कम्पैरेटिव लिटरेचर : थ्यौरी एण्ड प्रैक्टिस
इन्द्रनाथ चौधरी : तुलनात्मक साहित्य की भूमिका
वी. के. गोकाक : दी कंसेप्ट ऑफ इंडियन लिटरेचर
सं0 ए0 पोद्दार : इंडियन लिटरेचर
रेने वेलेक : डिस्क्रिमिनेषनस

रेने वेलेक : कंसेप्ट आफ क्रिटिसिज्म
आर. के. धवन (सं0) : कम्पैरिटिव लिटरेचर ऑफ थ्यौरी
नगेन्द्र, (सं0) : तुलनात्मक साहित्य
सं0 न्यूटन पी. स्टालनेख़्त : कम्पैरेटिव लिटरेचर : मेथड एण्ड हॉर्स्ट फ्रेन्ज पर्सपेक्टिव
उलरिख वेइस्तेइन : कम्पैरेटिव लिटरेचर एण्ड लिटरेरी थ्योरी
रेनेवेलक : आलोचना की अवधारणाएँ
बी0 एम0 जैन– रिसर्च मेथेडॉलॉजी
डॉ नगेन्द्र, (सं0) : कम्पैरेटिव लिटरेचर
एस0 एन0 गणेषन : अनुसंधान प्रविधि : सिद्धांत और प्रक्रिया
सं. भ. ह. राजूरकर / राजमल बोरा हाउस : हिन्दी अनुसंधान का स्वरूप
डॉ नगेन्द्र : 'ाोध और सिद्धांत
डा. तिलक सिंह : नवीन 'ाोध विज्ञान

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म.प्र)484887

पाठ्यक्रम संख्या : PG_HLCC017 **पाठ्यक्रम : तुलनात्मक भारतीय साहित्य**

सेमेस्टर– 04 क्रेडिट : 04 पूर्णांकः 100

नोटः– पाठय क्रम में निर्धारित भारतीय भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

इकाई–1 तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा– अर्थ, परिभा”ाा, ज्ञान क्षेत्र के रूप में विकास भारतीय तुलनात्मक

साहित्य के अध्ययन की परंपरा और इतिहास

इकाई–2 तुलनात्मक साहित्य का फ्रांसिसी और अमेरिकी सम्प्रदाय

वस्तुबीज (किमोटिक्स) और ग्रहीत अध्ययन (रिसेप्सन स्टडी) की दृष्टि से अध्ययन

इकाई–3 भारतीय साहित्य का स्वरूप भारतीय साहित्य की परंपरा (वैदिक साहित्य से आधुनिक काल तक)

भारतीय साहित्य के अध्ययन की अवष्यकता एवं महत्व

इकाई–4 भारतीय भा”ाा की गद्य विधाएँ–

कहानी वेदराही – गैर हाजिर (डोगरी)

इंदिरा गोस्वामी – देवी पीठ का रक्त (असमिया)

कुर्रतुल ऐन हैदर : आवारा गर्द (दई)

संस्मरण– फणीश्वर नाथ रेणु : अपने गाँव और पटना के बीच (अंग्रेजी)

उपन्यास– यू. आर. अनन्त मूर्ति– संस्कार (कन्नड)

इकाई–5 कविता–

जगन्नाथ प्रसाद दास – काला हॉडी (उडिया)

अवतार सिंह पाश – सबसे खतरनाक (पंजाबी)

लाइश्रम समरेन्द्र सिंह – शहर का मालिक (मणिपुरी)

मालिका अमरशेख – हरित बालाएँ खिलखिला रही हैं (मराठी)

निदा फांजली – पासपोर्ट ऑफिसर के नाम (उर्दू)

सहायक ग्रंथ–

तुलनात्मक साहित्य – इन्द्रनाथ मदान

तुलनात्मक साहित्य – सं. डॉ. नगेन्द्र

साहित्य सिद्धांत ;जीमवतल वस्पिजमतंजनतद्ध ऑस्टिन वॉरेन

भारतीय साहित्य : डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

आज का भारतीय साहित्य : डॉ. प्रभाकर माचवे, साहित्य अकादमी

चयनभ् सं. अरूण प्रकाश, साहित्य अकादमी

भारतीय साहित्य : लक्ष्मीकांत पाण्डेय, प्रमिला अवस्थी, राजकमल प्रकाशन

भारतीय साहित्य की भूमिका : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन

संस्कार, यू. आर. अनंतमूर्ति